



13. गीतामृतम्



श्रीमद् भगवद्गीता महाभारत के भीष्मपर्व का एक अंश है। उसमें कुल अठारह अध्याय और लगभग सात सौ श्लोक हैं। कुरुक्षेत्र के मैदान में पांडवों और कौरवों के मध्य महायुद्ध हुआ। शत्रु पक्ष में स्थित अर्जुन को अपने ही मित्रों और स्वजनों से युद्ध करना था। यह देखकर उन्हें मोह उत्पन्न होता है और वे विषादग्रस्त हो जाते हैं। स्वजनों के साथ होनेवाले युद्ध के विनाशक परिणाम से डरकर अर्जुन युद्ध न करने का संकल्प करते हैं।

इस स्थिति में अर्जुन के सारथी श्रीकृष्ण उन्हें कर्तव्य और अकर्तव्य का उपदेश देते हैं। श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया यह उपदेश 'गीता' के नाम से सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है। उस समय अर्जुन को दिया गया यह उपदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक और महत्वपूर्ण है। संसार के तत्त्वज्ञान के ग्रन्थों में गीता शीर्ष स्थान पर है।

फल की अपेक्षा किए बिना यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्तव्य कर्म में लगा रहे तो इस संसार में चारों ओर सुख ही सुख फैल जाए। 'फल की अपेक्षा किए बिना कर्म करना' यह गीता का केन्द्रवर्ती उपदेश है। प्रस्तुत पाठ में गीता के आठ श्लोक पसन्द किए गए हैं। इन श्लोकों में क्रमशः आत्मा की अमरता, जन्म-मरण की अनिवार्यता, कर्मयोग का स्वरूप, ज्ञान की महिमा, भक्त के प्रकार तथा स्वभाव और सात्त्विक बुद्धि का स्वरूप - इन बातों का निरूपण किया गया है। व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास करने के लिए ये सभी बातें अति महत्वपूर्ण हैं।

न जायते म्रियते वा कदाचि -

न्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।

अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो

न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥ 1 ॥ (2. 20)

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः ध्रुवं जन्म मृतस्य च।

तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ॥ 2 ॥ (2. 27)



कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूः मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥ 3 ॥ (2. 39)

श्रद्धावान् लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः ।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ॥ 4 ॥ (4. 39)

चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन ।
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ ॥ 5 ॥ (7. 16)

यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः ।
हर्षामर्षभयोद्वेगैः मुक्तो यः स च मे प्रियः ॥ 6 ॥ (12. 15)

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च कार्याकार्ये भयाभये ।
बन्धं मोक्षं च यो वेत्ति बुद्धिः सा पार्थ सात्त्विकी ॥ 7 ॥ (18. 30)

टिप्पणी

संज्ञा : (पुल्लिङ्ग) **लोकः** लोक, संसार के सभी प्राणी **पार्थः** अर्जुन (कुन्ती का एक नाम पृथा है । पृथा के पुत्र होने के कारण अर्जुन को पार्थ भी कहा जाता है ।) **सङ्गः** आसक्ति, मोह

(स्त्रीलिङ्ग) प्रवृत्तिः किसी काम में लगना, व्यवहार में सक्रिय रहना **निवृत्तिः** प्रवृत्त हों ऐसे काम में से (दूर) हट जाना, व्यवहार में निष्क्रिय हो जाना

विशेषण : **अजः** जन्म न लेने वाला, अजन्मा **नित्यः** हमेशा, सदैव तीनों काल में जिसका अस्तित्व रहता है वह (आत्मा) **शाश्वतः** सनातन, सदैव रहने वाला **पुराणः** पुरानी – अनादि ऐसी (आत्मा) **हन्यमाने (शरीरे)** नश्वर शरीर में, नष्ट हो जानेवाले शरीर में **ध्रुवः (मृत्युः)** निश्चित ऐसा (मृत्यु) **ध्रुवम् (जन्म)** निश्चित जन्म **पराम् (शान्तिम्)** परम शान्ति को **आर्तः** दुःखी **सात्त्विकी (बुद्धिः)** सतोगुण धारण करने वाली बुद्धि, उत्तम बुद्धि (बुद्धि के अन्य दो प्रकार – राजसी और तामसी है ।)

अव्यय : भूयः फिर, पुनः **कदाचन** कभी

समास : गीतामृतम् (गीतायाः अमृतम् – षष्ठी तत्पुरुष) । अपरिहार्ये (न परिहार्यम्, तस्मिन् – नञ् तत्पुरुष) । कर्मफलहेतुः (कर्मणः फलम्, कर्मफलम्, (षष्ठी तत्पुरुष) कर्मफलस्य हेतुः – षष्ठी तत्पुरुष) । अकर्मणि (न कर्म, अकर्म, तस्मिन् – नञ् तत्पुरुष) । संयतेन्द्रियः (संयतानि इन्द्रियाणि यस्य सः – बहुव्रीहि) । हर्षामर्षभयोद्वेगैः (हर्षः च अमर्षः च भयम् च उद्वेगः च इति हर्षामर्षभयोद्वेगाः, तैः हर्षामर्षभयोद्वेगैः – इतरेतर द्वन्द्व) । कार्याकार्ये (कार्यम् च अकार्यं च, कार्याकार्ये – इतरेतर द्वन्द्व) । भयाभये (भयं च अभयं च – इतरेतर द्वन्द्व) ।

कृदन्त : (सं. भू. कृ.) भूत्वा होकर, बनकर **लब्ध्वा** प्राप्त करके (हे. कृ.) **शोचितुम्** शोक करने के लिए

क्रियापद : प्रथम गण (परस्मैपदी) अधि + गम् > गच्छ (अधिगच्छति) पाना, जाना, पहुँचना (आत्मनेपदी) लभ् (लभते) प्राप्त करना भज् (भजते) सेवा करना उद् + विज् (उद्विजते) उद्विग्न होना, बेचैन होना

विशेष

1. शब्दार्थ : न जायते जन्म नहीं लेता, म्रियते न मरता नहीं, मृत्यु को प्राप्त नहीं होता भविता वा न भूयः फिर होगा या फिर होनेवाला है ऐसा भी नहीं न हन्यते मरता नहीं है हन्यमाने शरीरे जब नश्वर शरीर मरता है तब, नष्ट होनेवाला शरीर नष्ट होता है तब जातस्य उत्पन्न हुए को, पैदा हुए को अपरिहार्ये अर्थे टाली नहीं जा सकती, रोकी नहीं जा सकती ऐसी बात में मा कर्मफलहेतुः भूः कर्म के फल की इच्छावाला बनना नहीं (कर्म के फल की प्राप्ति को, तुम कर्म करने का प्रयोजन मत मानना) अकर्मणि ते सङ्गः मा अस्तु कर्म के अभाव में, कर्म न करने में तुम्हारा संग न हो तत्परः उसके बाद, उससे आगे संयतेन्द्रियः वश में है इन्द्रियाँ जिसकी, वह चतुर्विधाः चार प्रकार के सुकृतिनः अच्छे काम करने वाले, पुण्यशाली व्यक्ति (अच्छे काम करने से ही व्यक्ति सुकृति बनता है।) आर्तः दुःखी (जब किसी कारण वश कोई दुःखी व्यक्ति भगवान का भजन करता है तो उसे आर्त प्रकार का भक्त कहा जाता है।) जिज्ञासुः (ईश्वर के स्वरूप को) जानने की इच्छावाला (जो भक्त अन्य किसी सांसारिक वस्तु को प्राप्त करने की कामना न रखते हुए सिर्फ एक मात्र ईश्वर के रूप को जानने की कल्पना रखता हो, उसे जिज्ञासु भक्त कहा जाता है।) अर्थार्थी सांसारिक पदार्थों की कामना करनेवाला (धन, पद या पुत्र इत्यादि जैसे सांसारिक पदार्थों को प्राप्त करने की कामना से भगवान की भक्ति करने वाला अर्थार्थी भक्त है।) ज्ञानी ज्ञानी, ज्ञान सम्पन्न विद्वान (जिसे सांसारिक नश्वरता का और आत्मा की अमरता का तथा ईश्वर के स्वरूप का ज्ञान हो गया है, उस भक्त को ज्ञानी भक्त कहा जाता है।) भरतर्षभ हे उत्तम भरतवंशी राजा ! (अर्जुन का जन्म भरत के वंश में हुआ है) न उद्विजते (जिससे कोई) संताप प्राप्त नहीं होता न उद्विजते च यः और जो अपने आप भी (अन्य प्राणियों से) संताप या उद्वेग प्राप्त नहीं करता हर्षामर्षभयोद्वेगैः हर्ष (अर्थात् अनुकूल परिस्थिति में हर्ष का अनुभव करते रहने की क्रिया (वृत्ति), अमर्ष (अर्थात् दूसरों के सुख को सहन न करने की वृत्ति), भय (डर जाने की वृत्ति) और उद्वेग (निरन्तर उद्विग्न (खिन्न) रहने की वृत्ति) से मुक्तः मुक्त हुआ, छूटा हुआ कार्याकार्ये कर्तव्य और अकर्तव्य में भयाभये भय और अभय में बन्धनं मोक्षं च बंधन और मोक्ष को वेत्ति जानता है सात्त्विकी सात्त्विक है, सतोगुण से उत्पन्न हुई – निकली हुई

2. सन्धि : नायम् (न अयम्)। अजो नित्यः (अजः नित्यः)। शाश्वतोऽयम् (शाश्वतः अयम्)। पुराणो न (पुराणः न)। ध्रुवो मृत्युः (ध्रुवः मृत्युः)। तस्मादपरिहार्येऽर्थे (तस्मात् अपरिहार्ये अर्थे)। कर्मण्येवाधिकारस्ते (कर्मणि एव अधिकारः ते)। कर्मफलहेतुर्भूः (कर्मफलहेतुः भूः)। सङ्गोऽस्त्वकर्मणि (सङ्गः अस्तु अकर्मणि)। शान्तिमचिरेणाधिगच्छति (शान्तिम् अचिरेण अधिगच्छति)। सुकृतिनोऽर्जुन (सुकृतिनः अर्जुन)। आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी (आर्तः जिज्ञासुः अर्थार्थी)। यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते (यस्मात् न उद्विजते लोकः लोकात् न उद्विजते)। मुक्तो यः (मुक्तः यः)। स च (सः च)। यो वेत्ति (यः वेत्ति)।

स्वाध्याय

1. विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

(1) कः न जायते म्रियते वा कदाचित् ?

(क) मनुष्यः (ख) भक्तः (ग) आत्मा (घ) देहः

(2) कस्य मृत्युः ध्रुवः ?

(क) पदार्थस्य (ख) जातस्य (ग) धनस्य (घ) आत्मनः

(3) कस्मिन् अर्थे त्वं न शोचितुमर्हसि ?

(क) अपरिहार्ये (ख) परिहार्ये (ग) मरणे (घ) दुःखे

(4) कस्मिन् ते सङ्गः न स्यात् ?

(क) कर्मणि (ख) अकर्मणि (ग) ज्ञाने (घ) धने

(5) ज्ञानं कः लभते ?

(क) भक्तिमान् (ख) गुणवान् (ग) श्रद्धावान् (घ) धनवान्

(6) कतिविधाः भक्ताः भवन्ति ?

(क) चतुर्विधाः (ख) द्वाविधौ (ग) त्रिविधाः (घ) एकविधः

2. एकवाक्येन संस्कृतभाषयाम् उत्तरत ।

(1) अजः नित्यः शाश्वतः पुराणः कः ?

(2) मृतस्य किं ध्रुवम् ?

(3) कस्मिन् ते अधिकारः अस्ति ?

(4) कदा शान्तिम् अधिगच्छति ?

(5) कः भक्तः भगवतः प्रियः ?

3. वचनानुसारं शब्दरूपैः रिक्तस्थानानि पूरयत ।

एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
(1) शरीरे
(2)	जनाः
(3) लोकात्
(4) प्रवृत्तिः

4. रिक्तस्थानानां पूर्तिः विधेया ।

(1) न म्रियते वा कदाचित् आत्मा ।

(2) कर्मण्येवाधिकारस्ते मा कदाचन ।

(3) आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी च भरतर्षभ ।

(4) बन्धं मोक्षं च यो वेत्ति सा सात्त्विकी ।

5. रेखाङ्कितपदानां स्थाने प्रश्नवाचकं पदं लिखित्वा प्रश्नवाक्यं रचयत ।

(कम्, कीदृशे, किम्, कीदृशी, कस्य)

- (1) आत्मा हन्यमाने शरीरे न हन्यते ।
- (2) ज्ञानं लब्धा शान्तिम् अधिगच्छति ।
- (3) सुकृतिनः जनाः मां भजन्ते ।
- (4) सा बुद्धिः सात्त्विकी वर्तते ।

6. सन्धिविच्छेदं कुरुत ।

- (1) अजो नित्यः ।
- (2) शाश्वतोऽयम् ।
- (3) कर्मण्येवाधिकारस्ते ।
- (4) सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ।

7. समासप्रकारं लिखत ।

- | | |
|---------------------------|-------------------------------|
| (1) गीतामृतम् | (2) अपरिहार्ये । |
| (3) संयतेन्द्रियः । | (4) हर्षामर्षभयोद्वेगाः |
| (5) भयाभये । | |

8. अधस्तनयोः श्लोकयोः पूर्तिं कुरुत ।

- (1) जातस्य हि शोचितुमर्हसि ॥
- (2) यस्मान्नोद्विष्टे मे प्रियः ॥

9. अर्थविस्तारं कुरुत ।

- (1) कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूः मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥
- (2) श्रद्धावान् लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः ।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ॥
- (3) चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन ।
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ ॥

प्रवृत्ति

- भगवत् गीता का हिन्दी अनुवाद प्राप्त करके पढ़िए ।
- गीता के अपने मनपसन्द अन्य तीन श्लोक लिखिए और उनका अनुवाद कीजिए ।